PRIVATE CIRCULATION ONLY

# दिव्य ज्योति

अप्रैल 2006 ISSUE 0406 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज़ लैटर

## "मैंने जीवित प्रभु को देखा है!"

क्या आपने कभी जीवित प्रभु को देखा है? क्या आपको उन्होंने कभी दर्शन दिए? क्या आपको उनकी उपस्थिति का अनुभव कभी हुआ है ? क्या आप यह विश्वास करते हैं कि प्रभु येशु जीवित हैं, हमारे बीच उपस्थित हैं व कार्यरत हैं ? यदि हाँ, तो आप कैसे प्रमाणित कर सकते हैं कि वह जीवित हैं और हमारे बीच हैं? आपका जवाब होना चाहिए –उनके द्वारा किये अदभुत् चमत्कारों व रोग चंगाईयों से जो उन पर विश्वास करने वालों को वे प्रार्थना, वचन व स्तुति में प्रदान करते हैं। और यह सब हम साक्षात् रुप में आज भी "जीवन–धाम" में चल रही प्रार्थना में देख सकते हैं। यदि आपने फरीदाबाद में अब तक "जीवन–धाम" सैक्टर–9, सन्त अन्थोनी स्कूल, फरीदाबाद में हर इतवार प्रातः9.30 बजे से चलने वाली प्रार्थना में भाग नहीं लिया है, तो अभी भी वक्त है। स्वंय आकर देख लीजिए कि सत्य क्या है। स्वर्गराज्य निकट है। परख कर देखो कि प्रभु कितना भला ह। आप जीवित परमेश्वर की शक्ति, दया व प्रेम के साक्षी बन जाईए, विनीत व शुद्ध ह्रदय से प्रार्थना कर उनके दर्शन कीजिए जिससे आप विश्वास के साथ कह सकें, पूर्ण विश्वास के साथ कि "मैंने जीवित प्रभु येशु को देखा व अनुभव किया है।" यह अनुभव और एहसास आपके जीवन को बदल डालेगा और आप प्रभु येशु रक्रीस्त में नई स ष्टि बन जाओगे ठीक वैसे ही जैसे साऊल को जीवित प्रभु के दर्शन हुए **(प्रेरित-चरित 22:3-21)** और बाद में रक्रीस्त विश्वासियों के क्रूर अत्याचारी से वह सच्चे, धर्मप्रचारक के रुप में प्रेरित पौलुस बन गये, कई बार जीवित प्रभु का साक्ष्य दिया **(1कुरिन्थियों15:8),** और अन्त तक उनके विश्वास पर अटल रहे, कष्ट, अपमान और कोड़े सहे, और विश्वास की खातिर (रोम में उनका वध किया गया) शहीद हुए। यही है अटल विश्वास का एक जीता–जागता उदाहरण। यदि आपने प्रभु को देख लिया है तो क्या आप में ऐसा द ढ़ विश्वास है ? यदि नहीं, तो प्रभु से पवित्र आत्मा का वरदान माँग लें, जो भीरु को निर्भय और यमल (सशंयकर्ता) को द ढ़ विश्वासी बना देगा, स्वंय साक्ष्य देगा **(योहन15:26)** और बाद में आप को भी साक्ष्य दिलवायेगा।

सत्य यह है कि मसीह हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए क्रूस पर मरे जैसा कि धर्मग्रन्थ में लिखा है। वह कब्र में रखे गये और तीसरे दिन जी उठे **(1कुरिन्थियों 15:3-4)।** उसी येशु मसीह नाज़री के नाम के सामर्थ्य से सभी मनुष्य भले–चँगे हो जाते हैं क्योंकि ईश्वर ने उन्हें, जीवन के अधिपति, म तकों में से पुनर्जीवित किया है। और इसलिए "किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा मुक्ति नहीं मिल सकती, क्योंकि समस्त संसार में येशु नाम के सिवा मनुष्यों को कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है, जिसके द्वारा हमें मुक्ति मिल सकती है।**(प्रेरित-चरित4:10-12)** (येशु का अर्थ है "ईश्वर बचाता है" और मसीह या रक्रीस्त का अर्थ है "ईश्वर द्वारा अभिषिक्त") वही इस संसार में ईश्वर के इकलौते पुत्र होते हुए भी हमारे उद्धार के लिए मनुष्य के रुप में जन्मे और इस तरह वह पूर्ण ईश्वर व पूर्ण मनुष्य बने जिससे वह हमारे और ईश्वर के बीच आकाश के नीचे और धरती के ऊपर एकमात्र समर्थ मध्यस्थ बनें जो हमारा मेल ईश्वर से करा दे। इसके लिए उनको स्वंय को क्रूस पर बलि चढ़ा देना (हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए, पाप व शैतान पर विजय प्राप्त करने के लिए) तथा तीसरे दिन जी उठाया जाना (म त्यु पर विजय प्राप्त करने के लिए,

**पवित्र परिवार की रानी! हे माँ मरियम, हमारे परिवारों का संरक्षण कर।**

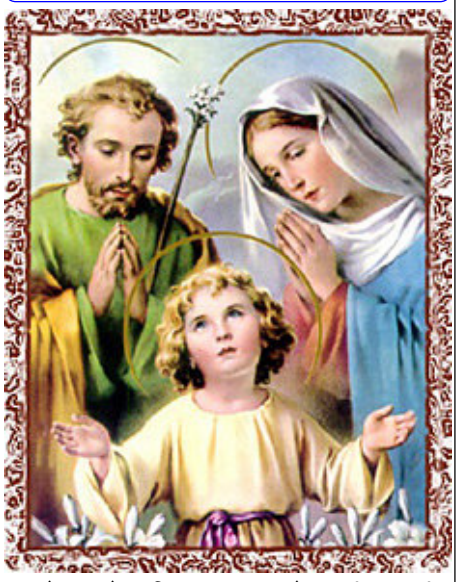

हे हमारे मुक्तिदाता प्रभु येशु की जननी! तूने आजीवन पवित्रता व ईश–समर्पण का व्रत निभाया, ईश–पुत्र येशु का पालन पोषण किया व उन्हें संहिता की शिक्षा दी, उन्हें स्वच्छन्द रुप से सम्पूर्ण मानवजाति के लिए समर्पित होने दिया, और तत्पश्चात सभी प्रेरितों को अपने मसीही कुटुम्ब में शामिल कर उन्हें प्रार्थना, विश्वास व धैर्य द्वारा एकजुट रखा, एकह्रदय बना दिया और प्रथम कलीसिया का नेत त्व किया। हे हमारी माँ! हमारे परिवार को अपने संरक्षण में ले ले, उन पर एकजुट होकर रहने व एकह्रदय होकर प्रार्थना करने की क पा बरसा दे। टूटे–बिछड़े व बिखरे परिवारों के लिए मध्यस्थ बन। दु:खित, पीड़ित, शोषित, आध्यात्मिक व शारीरिक रोगों से ग्रसित परिवारों व सदस्यों को स्वास्थ्य, शक्ति व सान्त्वना प्रदान कर क्योंकि तू ही रोगियों का स्वास्थ्य और दु:खियों की दिलासा है। सभी को अपने पुत्र की पवित्रता, परिपूर्णता की ओर अग्रसर होने के लिए तत्पर बना, धर्मोत्साह से विभूषित कर। यह विनय प्रार्थना हम करते हैं अपने प्रभु येशु रक्रीस्त के द्वारा। आमेन।

**"मसीह पाप का हिसाब चुकाने के लिए एक बार मर गये और अब ईश्वर के लिए ही जीते हैं। आप लोग भी अपने को ऐसा ही समझें-पाप के लिए मरा हुआ और येशु मसीह में ईश्वर के लिए जीवित।" (रोमियों 6:10-11)**

पिता द्वारा आत्मा की शक्ति से अनन्त काल तक हमारे संग रहने के लिए, हमारे लिए स्वर्ग में स्थान का प्रबंध करने के लिए व हमारे लिए पिता से प्रार्थना व मध्यस्थ करने के लिए तथा धर्मग्रन्थ की पूर्ति के लिए) अनिवार्य था।

वास्तव में प्रभु येशु का पुनरुत्थान यदि नहीं हुआ होता, तो हमारा उन पर विश्वास भी व्यर्थ होता, क्योंकि वे म तकों में से एक गिने जाते जो अपने मक्सद के लिए शहीद हो गये। फिर न तो वह किसी को दिखाई देते और न ही कोई उन पर विश्वास करता, उनके शिष्य भी उन्हें भूल जाते, न ही प्रतिज्ञात पवित्र आत्मा की वर्षा होती और न ही कोई पश्चाताप कर बपतिस्मा ग्रहण करता और न ही आज करोड़ों लोग (जो रव्रीस्तीय हैं) उनके अनुयायी होते। न तो यह मासिक पत्रिका होती और न मैं इस विषय में इस पत्रिका में कुछ लिखता क्योंकि वह तो सिर्फ इतिहास की एक घटना मात्र बन कर रह जाती जो आज वर्तमान काल में किसी के लिए उपयोगी या प्रेरणात्मक न होती। न ही कोई उनके नाम पर अदभुत् चमत्कार करता या रोग चंगाई की घोषणा करता। नतीजा यह होता कि अन्त में सभी नास्तिक या शैतान के चुंगल में फँसे अन्धकार की सन्तान बन जाते और दुनिया तेजी से बुराई व पाप की और अग्रसर होती तथा आपसी युद्ध में, या महामारी में शायद कब की खत्म भी हो गई होती। तब ईश्वर की स ष्टि का मुकुट, मनुष्य, एक अभिशाप, एक विद्रोही व ईश–निन्दक या ईश–विरोधी प्रजाति बन जाता जिससे हम सबका जीवन आज ऐसा न होता जैसे कि अब वास्तव में है। जब आपसी प्रेम, क्षमा व इंसानियत ही समाप्त हो जाये, तो मनुष्य सभी जानवरों से भी बदतर हो जाते और उनके अन्दर शैतान एक भयानक रुप ले लेता। सभी पाप के गुलाम बने रहते, म त्यु पर कभी विजय प्राप्त न कर पाते और सीधे नरक की न बुझने वाली अग्नि में ईश्वर के क्रोध द्वारा ज़ाल दिये गये होते।

पर ईश्वर ने ऐसा कुछ नहीं होने दिया है क्योंकि ईश्वर ने संसार से इतना प्रेम किया कि उसने अपने इकलौते पुत्र को संसार के लिए अर्पित कर दिया और बाद में महिमान्वित कर, पुनजीर्वित कर अपने दाहिने (स्वर्ग में) बिठा दिया, सारा अधिकार उन्हें सौंप दिया जिससे कि जो उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पा ले। वह प्रभु पर विश्वास करने के कारण अनन्त जीवन के लिए जी उठे, रव्रीस्त के साथ उनकी महिमा के सहभागी बने, ईश्वर की प्रिय सन्तान कहलाये और उसके उत्तराधिकारी बने। यही ईश्वर का मुक्ति–विधान है। पुनरुत्थान ही हमारे विश्वास की नींव है और हमारी आशा का स्त्रोत है, हमारे आनन्द का विषय है। क्योंकि प्रभु ने हमसे प्रतिज्ञा की है– **पुनरुत्थान और जीवन मैं हूँ। जो मुझमें विश्वास करता है, वह मरने पर भी जीवित रहेगा। (योहन 11:25)** "यदि मसीह पर हमारा भरोसा इस जीवन तक ही सीमित है, तो हम सब मनुष्यों में से सबसे अधिक दयनीय है।" **(1कुरिन्थियों15:19)** पर हमारा विश्वास यह है कि जिसने येशु को म तकों में से जिलाया, यदि उसका आत्मा आप लोगों में निवास करता है, वह अपने आत्मा द्वारा आपके नश्वर शरीरों को भी जीवन प्रदान करेगा।" **(रोमियों 8:11)**

# क्या आप पुनरुत्थान में विश्वास करते हैं?

इस अप्रैल**16** को हमने पास्का–पर्व मनाया था जो कलीसिया का सबसे बड़ा पर्व माना जाता है। पर इस विषय में बहुत ही कम लोगों को उचित जानकारी है। इसलिए, इस महान् रहस्य के विषय में हम पढ़ें।

***पुनरुत्थान क्या है?*** पिता परमेश्वर ने पवित्र आत्मा की शक्ति द्वारा अपने पुत्र प्रभु येशु को सर्वप्रथम अनन्त काल के लिए पुनर्जीवित किया। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो अनन्त काल के लिए इस प थ्वी पर जी सका या जी सकेगा क्योंकि सभी आदि पाप के कारण, जो हमारे आदि माता–पिता आदम और हेवा की अवज्ञा था, म त्यु की दण्डाज्ञा को भोगेंगे और सभी कुछ समय के लिए ही इस धरती पर जीवन बिता सकते हैं। **(उत्पत्ति 3:19,22)** इस जीवन में किये हर कुकर्म व सत्कर्म का लेखा सभी को न्याय के दिन ईश्वर के आगे देना पडेगा। पर प्रभु येशु आदि पाप रहित उत्पन्न हुए थे। माँ मरियम पवित्र आत्मा की शक्ति से गर्भवती हुई थी और इसलिए वह जन्म से ही निष्कंलक व निष्पाप रहे जैसे माँ मरियम भी रहीं थीं। अपने जीवन में उन्होंने न तो कोई पाप किया, न बुराई। केवल अपने पिता की इच्छा ही उन्होंने पूरी की थी। ईश्वर ने उन्हें सारा अधिकार सौंप दिया है। वह स्वंय पुनरुत्थान और जीवन हैं, जीवन के स्त्रोत हैं, **(योहन 11:25, प्रकाशना 1:18)** प्रथम और अन्तिम हैं, ईश्वर के पहलौठे हैं और इसलिए म तकों से प्रथम जी उठने वाले भी, जिन पर म त्यु का कोई अधिकार नहीं। म त्यु और अधोलोक की कुँजियाँ उनके पास हैं। तो क्या म त्यु उन्हें म तकों में बाँध सकती थीं? नहीं, प्रभु येशु ने तो अपने मरण और पुनरुत्थान द्वारा सदा के लिए म त्यु को पराजित कर दिया है।

उत्थान के बदले प्रयुक्त यूनानी शब्द का अर्थ है, **फिर से जगाना** या **ऊपर उठना**। ईश्वर अपने पुत्र को मरणोपरान्त म त्यु–निद्रा से अपने आत्मा की शक्ति द्वारा उन्हें जगाते हैं। प्रभु के पुनरुत्थान के कारण उन पर विश्वास करने वाले म तकों का भी पुनरुत्थान उसी आत्मा के सामर्थ्य से सम्भव होगा और जब सभी चुने हुए लोगों का पुनरुत्थान हो जायेगा तब धर्मग्रन्थ का यह कथन पूरा होगा– "म त्यु का विनाश हुआ। विजय प्राप्त हुई। म त्यु! कहाँ है तेरी विजय ? म त्यु! कहाँ है तेरा दंश?" म त्यु का दंश तो पाप है (पाप का वेतन म त्यु है) पर ईश्वर हमें मसीह के द्वारा म त्यु पर विजय प्रदान करेंगे जिसने पाप व म त्यु पर विजय पाई है।

***पुनरुत्थान क्या जीवन दान या मुर्दे को जिलाने के बराबर हैं?***

नहीं, क्योंकि स्वंय प्रभु ने अपने जीवन में ऐसे चमत्कार किये थे। उन्होंने जैरुस नामक सभाग्रह के अधिकारी की बेटी को जिलाया (अर्थात मरणोपरान्त नया जीवन दिया) था **(मत्ती9:18-26, मारकुस5:21-43; लूकस 8:40-56)** जो कुछ ही घण्टे पहले मरी थी, उन्होंने नाईन की विधवा के एकलौते जवान बेटे को जिलाया था (जो कुछ घण्टों पहले मरा होगा) **(लूकस 7:11-16)** और उन्होंने अपने मित्र मरथा–मरियम के भाई लाज़रुस को जिलाया था, जो चार दिनों से कब्र में था **(योहन 11:17)** और चौथे दिन प्रभु ने एकबार आवाज़ देकर लाज़रुस को कब्र से बाहर बुला लिया था **(योहन 11:1-44)।** इन तीनों को उसी शरीर में नया जीवन तो मिला पर वह कुछ वर्षों बाद अवश्य ही मर गये क्योंकि वे साधारण मनुष्य थे और म त्यु पर विजय तब तक मिली नहीं थी। ईश्वर की महिमा व शक्ति तो उनके म त्यु से जीवन पर आने से सबने देख ही ली थी और कई लोग विस्मित हो गये व कुछ पूर्ण विश्वास में आ गये थे। पर मसीह का जी उठना अनन्त काल के लिए था क्योंकि उनका शरीर पुनर्जीवित, महिमान्वित, अनश्वर व शक्तिशाली था जिसपर म त्यु का कोई वश नहीं है, समय व स्थान की सीमा नहीं है। **(1 कुरिन्थियों 15:42-49)** वह शरीर आध्यात्मिक है, स्वर्ग के मनुष्य के रुप में बना है। वह न तो गलता और न बदबू देता है, न उसे कीड़े खाते और न ही उसे कोई क्षति पहुँचती हैं।

***पुनरुत्थान और पुर्नजन्म में क्या अन्तर हैं :***

अन्य कुछ धर्म पुर्नजन्म में विश्वास रखते हैं पर वास्तव में ऐसा नहीं है कि कोई पिछले जन्म में कोई पशु या पक्षी था, या कोई और प्राणी या व्यक्ति था। केवल मनुष्य को ईश्वर ने अपने प्रतिरुप बनाया, मिट्टी से गढ़ा और उसमें अपनी आत्मा फूँकी **(उत्पत्ति 1:27;2:7)** और उसे सारी स ष्टि पर अधिकार दिया। पुनरुत्थान से आत्मा तो वही है, पर शरीर वही नहीं रह जाता।

**"ईश्वर ने म त्यु के बन्धन खोल कर उन्हें पुनजीर्वित किया। यह असम्भव था कि वह म त्यु के वश में रह जायें।" (प्रेरित चरित 2:24)**

वह भौतिक शरीर नहीं जो जर्जर, शक्तिहीन व गलने लग जाती है, पर आध्यात्मिक, स्वर्गिक शरीर होता है, जिसमें न वेदना न दुःख है, न वह झुलसेगा, न थकेगा, न बीमार पड़ेगा – "इन्हें फिर कभी न तो भूख लगेगी और न प्यास, इन्हें न तो धूप से कष्ट होगा और न किसी प्रकार के ताप से", **(प्रकाशना 7:16)** "न तो म त्यु होगी, न शोक, न विलाप और न दुःख" **(प्रकाशना 21:4)**।

एक व्यक्ति की आत्मा करने के बाद उसके रचयिता ईश्वर के पास लौट जाती है। आत्मा की शुद्धता के अनुसार, जीवन के कर्मों के अनुसार उसका व्यक्तिगत न्याय होगा और वह नरक में या अधोलोक में या स्वर्ग में जायेगा। पर वही आत्मा किसी के अन्दर प्रवेश भी कर जाये तो वह उस व्यक्ति की आत्मा की जगह नहीं ले सकती। एक व्यक्ति के अन्दर अनेक (सैकडों) दुरात्माँए प्रवेश कर सकती हैं। ईश्वर के लिए आत्माओं की कमी नहीं है। वह सब कुछ का रचयिता है। हर व्यक्ति जब इस संसार मे पैदा होता है, तो उसे एक नई व शुद्ध आत्मा ईश्वर प्रदान करता है। और ईश्वर यही चाहता है कि मरने पर भी सभी की आत्माँए वैसे ही उजली व शुद्ध हों जैसे वह जन्म के समय थीं।

इसलिए हमें यदि मुक्ति चाहिए तो हमें मुख से यह स्वीकार करना है कि येशु प्रभु हैं, हमारे मुक्तिदाता हैं, व हृदय से विश्वास करना है कि ईश्वर ने उन्हें म तकों में से जिलाया है **(रोमियो 10:9)**। जी उठने के बाद पहले मरियम मगदलेना ने उन्हें देखा **(योहन 20:11-18)**, फिर पेत्रुस ने **(लूकस 24:34, 1कुरिन्थियों 15:5)**, एम्माऊस जाने वाले शिष्यों ने **(लूकस 24:13-31)**, फिर प्रेरितों ने **(योहन 20:19-23; 20:24-29; 21:1-14)** तीन बार, फिर एक ही समय में पाँच सौ से अधिक भाईयों ने देखा। **(1कुरिन्थियों 15:6)**

प्रभु येशु आज भी हमारे बीच जीवित हैं और निरन्तर हमारी मुक्ति की राह देखते रहते हैं। हमारे लिए वह पिता से हमेशा मध्यस्थ करते हैं। 2000 वर्षों बाद भी आज हमारे बीच वही चमत्कार हो रहे हैं जैसे उन्होंने अपने जीवन काल में दिखाये थे और ये उनके विश्वासियों द्वारा वह पूर्ण कर रहें है जैसे उन्होंने प्रतिज्ञा की थी **(योहन 14:12)**। उन्होंने कहा, "याद रखो, मैं संसार के अन्त तक सदा तुम्हारे साथ हूँ।" **(मत्ती 28:20)**

# 'जीवन-धाम' के जीवित साक्ष्य

## 14 वर्षों बाद ईश्वर क पा से बच्चे का दान मिला

**"तेरी शिक्षा मुझे ज्योति प्रदान करती है"-वचन की शक्ति द्वारा इन सबकी आँखों की रोशनी बढ़ी**

प्रभु येशु की स्तुति धन्यवाद और महिमा। मैं, किरन देवी (उम्र–33 वर्ष), जीवन–धाम में पिछले साल 2 महीने से लगातार हर इतवार आई थी और मेरे यहाँ आने का कारण था मेरा सूना परिवार। शादी के 14 वर्षों बाद भी मुझे संतान का लाभ न हुआ। 13 वर्षों तक मैंने इलाज करवाया। पर कोई भी इलाज सफल न हुआ। न ही मुझे गर्भ ठहरा। इलाज पर हमने, मैं और मेरे पति मूसोदास, 50 हज़ार रुपये से भी अधिक लगा दिये। दिल्ली व बिहार में कई अस्पतालों में इलाज चला। आखिर हम निराश हो चुके थे। फिर मेरे एक पड़ोसी ने यहाँ जीवन–धाम में चल रही रोग चंगाई प्रार्थना सभा के विषय में बताया। यहाँ इतवार को प्रार्थना में शामिल होने मैंने प्रभु के दिव्य वचनों को सुना, अनेक गवाहियाँ सुनीं व चमत्कार देखे जिससे मेरा विश्वास सुद ढ़ हो गया। दो महीने के अन्दर ही मैं गर्भवती हो गई और बाद मैं आ न सकी। 4 महीने पहले प्रभु येशु की क पा से हमारे सूने परिवार में एक सुन्दर लडकी (खुशी कुमारी) ने जन्म लिया। इस महान् क पा के लिए प्रभु को लाखों बार धन्यवाद।

**किरन देवी-मूसो दास,** फरीदाबाद

**"प्रभु वन्ध्या को आनन्द प्रदान कर उसे पुत्रवती माता के रुप में घर में बसाता है।" (स्तोत्र 113:9)**

## येशु ही मेरा और मेरे परिवार का उद्धारक है!

प्रभु येशु, मेरे मुक्तिदाता की जय हो! प्रभु येशु की महिमा हो!

मैं, श्याम (उम्र 30 वर्ष), पिछले 3 सालों से जीवन–धाम में चल रही इतवार की प्रार्थना सभा में भाग लेता आ रहा हूँ। इन वर्षों में प्रार्थना के ज़रिये प्रभु येशु ने मुझ पर तथा मेरे परिवार पर अनेक क पाँए बरसाई हैं जिसकी मैं अब गवाही दे रहा हूँ:

1) मेरी पहली गवाही यह है कि पिछले 14 सालों से मुझे जो पेट दर्द होता था वो प्रार्थना में शामिल होने पर स्वंय गायब हो गया। कई डॉक्टरों को दिखाया। किसी ने जिगर खराब बताया, किसी ने गैस की शिकायत बताई, किसी ने अल्सर (रसौली) और किसी ने कुछ और। इलाज करवाते–करवाते मैं अपनी कमाई व अपना समय भी खो बैठा। एक पण्डित ने तो सीधे ही यह कह दिया कि इस बीमारी से

## 6-मासीय/181-दिवसीय "नया-नियम" पाठ्य क्रम

पिछले माह हमने आपको मार्च माह का पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया था। अब प्रस्तुत है **अप्रैल के महीने का पाठ्यक्रम:**

| तारीख | वचन | तारीख | वचन | तारीख | वचन |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | प्रेरित-चरित 3-4 | 12 | प्रेरित-चरित 25-26 | 23 | 1 कुरिन्थियो 3-4 |
| 2 | प्रेरित-चरित 5-6 | 13 | प्रेरित-चरित 27-28 | 24 | 1 कुरिन्थियो 5-6 |
| 3 | प्रेरित-चरित 7-8 | 14 | रोमियों 1-2 | 25 | 1 कुरिन्थियो 7-8 |
| 4 | प्रेरित-चरित 9-10 | 15 | रोमियों 3-4 | 26 | 1 कुरिन्थियो 9-10 |
| 5 | प्रेरित-चरित 11-12 | 16 | रोमियों 5-6 | 27 | 1 कुरिन्थियो 11-12 |
| 6 | प्रेरित-चरित 13-14 | 17 | रोमियों 7-8 | 28 | 1 कुरिन्थियो 13-14 |
| 7 | प्रेरित-चरित 15-16 | 18 | रोमियों 9-10 | 29 | 1 कुरिन्थियो 15 |
| 8 | प्रेरित-चरित 17-18 | 19 | रोमियों 11-12 | 30 | 1 कुरिन्थियो 16 |
| 9 | प्रेरित-चरित 19-20 | 20 | रोमियों 13-14 | मई 01 | 2 कुरिन्थियो 1-2 |
| 10 | प्रेरित-चरित 21-22 | 21 | रोमियों 15-16 | 02 | 2 कुरिन्थियो 3-4 |
| 11 | प्रेरित-चरित 23-24 | 22 | 1 कुरिन्थियों 1-2 | 03 | 2 कुरिन्थियो 5-6 |

**"यदि आप लोग मुख से स्वीकार करते हैं कि येशु प्रभु हैं और हृदय से विश्वास करते हैं कि ईश्वर ने उन्हें म तकों में से जिलाया तो आप को मुक्ति प्राप्त होगी।" (रोमियों 10:9)**

मेरी म त्यु हो जायेगी। तब से मेरी चिन्ता और बढ़ गई। मैं बहुत डर गया और मेरी रातों की नींदें उड़ गईं। फिर किसी सज्जन ने मुझे यहाँ हो रही प्रार्थना व चमत्कारों के विषय में बताया। जब से मैं यहाँ आने लगा मेरी पेट की बीमारी बिल्कुल ठीक हो गई।

2) मेरे घुटने के नीचे बहुत खुजली होती थी और इसका भी मैंने कई जगह इलाज करवाया। कंघी से तो कभी सूई से मैं पैर खुजाता था जिससे खून निकलता था। इलाज सभी निष्फल रहे। मैंने इस एलर्जी से भी चंगाई "जीवन–धाम" में आकर पाई।

3) मै कई वर्षों से नशे का गुलाम था। बीड़ी, सिगरेट, शराब से लेकर अफीम, गाँजा इत्यादि सभी तरह के नशे का सेवन करता था। किसी भी तरह से मैं इन बुरी आदतों के चगुँल से छूट न सका। लेकिन पिछले 3 महीने से प्रभु येशु, मेरे मुक्तिदाता व उद्धारक, की क पा से मैंने इन सब के सेवन से पूर्ण रुप से मुक्ति पा ली है।

4) मेरा घर नेपाल में है जहाँ मेरी माँ और मेरी बहन रहती है। मेरी माँ बिल्कुल अंधी हो चुकी थी और मेरी बहन उन्हें हाथ पकड़ कर चलाती थी। मैंने यहाँ से विश्वास करते हुए नया जीवन की किताब, बाइबिल, आशीष किया तेल और पानी, मिट्टी इत्यादि घर भेजा था। जहाँ पहले मोतिया बिन्द के ऑपरेशन के बाद भी माँ को कुछ दिखाई नहीं देता था और डॉक्टर ने आँख बदलवाने की बात कही थी, वहाँ अब प्रभु आशीष किये तेल, पानी इत्यादि का इस्तेमाल करने पर मेरी माँ की आँखों की रोशनी वापिस आ गई। मेरा छोटा भाई, जो 12 साल का है और कम सुनता था, अब ठीक से सुनने लगा है। मेरे घर में शान्ति और प्रेम का निवास हो गया है। यह सभी चमत्कार केवल प्रभु येशु ही दिखा सकते हैं और उनके द्वारा अब मेरे परिवार को शारीरिक एवं आध्यात्मिक चंगाई मिली है। Praise the Lord ! Alleluia!

***"प्रभु-भक्तों के लिए ईश्वर की क पा और उनके पुत्र-पौत्रों के लिए उसकी न्यायप्रियता सदा-सर्वदा बनी रहती है।" (स्तोत्र 103:17)***

**"संतान प्रभु द्वारा प्रदत्त पारितोषक है!" प्रभु ने इन्हें संतान का दान देकर अनुग्रहित किया!**

***"जीवन-धाम" की ओर से सभी पाठक गणों को पास्का-पर्व की हार्दिक शुभकामनाँए। पुनर्जीवित प्रभु की खुशी और शान्ति आपके मध्य निवास करे व आपको सुद ढ़ बनाये!***

**Happy Easter!**

## ★ बाईबिल प्रतियोगिता ★

### 5) मारकुस रचित सुसमाचार
### g) अध्याय 10-12

प्रस्तुत वाक्यांश सन्त मारकुस के सुसमाचार के अध्याय **10** से **12** तक से लिये गये हैं। इन वाक्यांशों की संख्या बतायें तथा यह बतायें कि ये वाक्य किसने और किससे कहे:

1)_____को_____ देना उचित है या नहीं ? हम _____ या नहीं दें ?

2)"अपने____की महिमा में हम दोनों को_____ साथ____दीजिए–एक को अपने_____ और एक को अपने____।"

3)"____! देखिए,____का वह पेड़, जिसे आपने____दिया था, सूख गया है।"

4) "...वह_____का नहीं,_____का ईश्वर है। यह तुम_____का भारी भ्रम है।"

5)"यह तो_____है। चलो हम इसे _____डालें और इसकी_____हमारी हो जायेगी।"

6)"क्या अपनी_____का_____करना _____के लिए उचित है ?"

7) "यह क्या कर रहे हो?____क्यों____ हो?"

8) "शास्त्री_____कैसे कह सकते हैं कि_____ _____के पुत्र हैं?

### 5) मारकुस रचित सुसमाचार
### f) अध्याय 7-9

**1) उन पाँच, पाँच, बारह। (8:19)**
**2) अशुद्ध, बुरे, मन। (7:20-21)**
**3) प्रार्थना, उपवास, जाति। (9:29)**
**4) कान, जीभ, बोला। (7:35)**
**5) तीन, मूसा, एलियस। (9:5)**
**6) पुत्र, दुःख, ठुकराया, दिन। (8:31)**
**7) शिक्षा, मनुष्यों, नियम। (7:7)**
**8) अपदूत, गिर, फेन। (9:20)**

### प्रतियोगिता के नियम

क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के 20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर एक पोस्ट कार्ड या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए – **जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर-22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।**
**फोन- 0129 2231126**

ख ) अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखिए। प्रतियोगिता की संख्या एवं शीर्षक लिखना ज़रुरी है। सभी उत्तर(प्रश्न संख्या सहित) क्रमानुसार होने चाहिएँ।

ग) इनाम सिर्फ उन प्रतियोगियों को मिलेगा जो लगातार तीन प्रतियोगिताओं के सही–सही उत्तर समय पर देंगे।

घ) प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले माह के प्रकाशन में बताये जायेंगे।

***"हमारे ईश्वर को अनन्त काल तक स्तुति, महिमा, प्रज्ञा, धन्यवाद, सम्मान, सामर्थ्य और शक्ति! आमेन!" (प्रकाशना 7:12)***


**Visit our website:**
**www.jeevandham.org**
**E-mail : justcallanthony@yahoo.com**


***क्या आप चिन्तित.....हैं ?***
***क्या आप दुःखी.....हैं ?***
***क्या आप रोगी.....हैं ?***
***क्या आप के मन में अशान्ति.....है ?***

***आपको सांत्वना देने के लिए एक जगह है। वह है 'जीवन-धाम'। आप सन्त अन्तोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद में हर रविवार प्रातः 9.00 बजे से 12.30 बजे तक 'जीवन-धाम' 696/22, फरीदाबाद द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर यीशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।***

***"म त्यु का विनाश हुआ। विजय प्राप्त हुई। म त्यु! कहाँ है तेरी विजय? म त्यु! कहाँ है तेरा दंश?" (1कुरिन्थियों 15:54-55)***


Edited & Published by Thomas Ari palam, 553/23, Faridabad  Printed at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, Haryana